भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग

डॉ. नवीन कुमार जग्गी, आशना सूरी, तथा सायशा सूरी
दिल्ली

भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग का ही समानार्थक है ज्योति पिंड। पुराणों में अभिलिखित तथ्यों के अनुसार, ज्योतिर्लिंग यानी 'व्यापक ब्रह्मात्मलिंग' जिसका अर्थ है 'व्यापक प्रकाश'। महादेव लिंग के बारह खंड हैं। शिवपुराण में अंकित है, कि ब्रह्म, माया, जीव, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी को ज्योतिर्लिंग या ज्योति पिंड कहा गया है। – ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर कहा जाता है कि विक्रम संवत् के कुछ सहस्राब्द पूर्व संपूर्ण धरती पर उल्कापात का अधिक प्रकोप हुआ। आदिमानव को यह महादेव का आविर्भाव दिखा। जिस स्थान पर ये पिंड गिरे, उस स्थान पर इन पवित्र पिंडों के संरक्षण के लिए मंदिर बनाये गये।

इस तरह पृथ्वी पर हजारों शिव मंदिरों की रचना हुई। उनमें से मुख्य थे एक सौ आठ ज्योतिर्लिंग। परन्तु वर्तमान में बारह ज्योतिर्लिंग विद्यमान हैं। शिव पुराण के अनुसार उस समय आकाश से ज्योति पिंड पृथ्वी पर गिरे तथा उनसे थोड़ी देर के लिए प्रकाश फैल गया।

ऐसा कहा जाता है कि इन स्थानों पर भगवान महादेव साक्षात् रूप में वास करते हैं। भगवान यहाँ कब प्रकट हुये ये कोई नहीं जानता। इसका अनुमान लगाना भी अभी तक संभव नहीं हो पाया है। लेकिन हिंदुओं में यह मान्यता है कि जो व्यक्ति प्रतिदिन प्रात: तथा सायं शिव के इन बारह ज्योतिर्लिंग का नाम लेता है उनका स्मरण करता है, वह इन ज्योतिर्लिंग के स्मरण से अपने 7 जन्मों के पापों से मुक्त हो जाता है । महादेव के ज्योतिर्लिंगों की संख्या बारह है, जो अलग–अलग जगहों पर विद्यमान है।

बारह ज्योर्तिलिंग

1. सोमनाथ ज्योतिर्लिंग

सोमनाथ ज्योतिर्लिंग भारत का ही नहीं, अपितु इस पृथ्वी का पहला ज्योतिर्लिंग माना जाता है। यह मंदिर गुजरात राज्य के सौराष्ट्र क्षेत्र में स्थित है। शिवपुराण के अनुसार जब चंद्रमा को दक्ष प्रजापति ने क्षय रोग होने का

शाप दिया था, तब चंद्रमा ने इसी स्थान पर तप कर इस शाप से मुक्ति पायी थी। ऐसा भी कहा जाता है कि इस शिवलिंग की स्थापना स्वयं चंद्रदेव ने की थी। विदेशी आक्रमणों के कारण यह सत्रह बार नष्ट हो चुका है। हर बार यह बिगड़ता है और बनता रहता है ।

धार्मिक शास्त्रों तथा ग्रंथों के अनुसार भारत के सबसे प्रमुख तीर्थस्थलों में से एक सोमनाथ मंदिर की स्थापना स्वयं चन्द्रदेव अर्थात सोम भगवान् ने की थी, इस मंदिर के इतिहास से एक अत्यन्त प्राचीन एवं प्रचलित धार्मिक कथा भी जुड़ी हुई है। ऐसी मान्यता है कि भगवान शिव के इस प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग के दर्शन मात्र से ही भक्तों के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं एवं सोमनाथ भगवान की पूजा–आराधना से भक्तों के क्षय अथवा कुष्ठ रोग ठीक हो जाते हैं। भगवान शिव का यह पहला ज्योर्तिलिंग सोमनाथ 3 भागों में बँटा हुआ है, जिसमें मंदिर का गर्भगृह, नृत्यमंडप तथा सभामंडप व्यवस्थित है।

2. मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग

यह ज्योतिर्लिंग आन्ध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के तट पर श्रीशैल नामक पर्वत पर अध्यासीन है। इस मंदिर को भगवान शिव के कैलास पर्वत के समान कहा गया है। अनेक धार्मिक शास्त्र इसके धार्मिक तथा पौराणिक महत्व की व्याख्या प्रतिपादित करते हैं। कहते हैं कि इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने मात्र से ही व्यक्ति को उसके सभी पापों से मुक्ति मिलती है। एक पौराणिक कथा के अनुसार जहाँ यह ज्योतिर्लिंग है, वहाँ शिव का पूजन करने से व्यक्ति को अश्वमेध यज्ञ का पुण्य फल प्राप्त होता है।

यह ज्योतिर्लिंग श्रीशैल पर इक्यावन शक्तिपीठों में से एक है। सती की देह का ग्रीवा भाग जहाँ गिरा वहा भ्रमराम्बा देवी का मन्दिर है। वीर–शैवमत के पंच आचार्यो में एक जगद्गुरु श्रीपति पंडिताराध्य की उत्पत्ति मल्लिकार्जुन लिंग से ही मानी जाती है ।

शिवपुराण की 'कोटिरुद्रसंहिता' में मल्लिकार्जुन के विषय में बताया गया है। मल्लिका का अर्थ माँ पार्वती है तथा अर्जुन महादेव शिव को कहा जाता है। अगर हम इन दोनों शब्दों की संधि करते हैं, तो यह 'मल्लिकार्जुन' शब्द बनता है।

3. महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग

यह ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश की प्रसिद्ध आध्यात्मिक राजधानी उज्जैन नगरी में अध्यासीन है। महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग का महत्व यह है, कि ये एकल दक्षिणमुखी ज्योतिर्लिंग है। यहाँ प्रतिदिन प्रातः की जाने वाली भस्म आरती विश्व में प्रसिद्ध है। महाकालेश्वर की पूजा विशेष रूप से आयुवृद्धि तथा आयु पर आये हुए संकट को टालने के लिए की जाती है। उज्जैनवासी मानते हैं, कि भगवान महाकालेश्वर ही उनके राजा हैं तथा वे ही उज्जैन की रक्षा कर रहे हैं।

4. ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग

ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्यप्रदेश के शिवपुरी में अध्यासीन है। यहाँ दो ज्योतिर्लिंगों की पूजा की जाती है। ओंकारेश्वर और अमलेश्वर। शिवपुराण की कोटिरुद्रसंहिता के अठारहवें अध्याय में इनका वर्णन मिलता है। ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग को शिव महापुराण में 'परमेश्वर लिंग' कहा गया है। यही एकमात्र ऐसा ज्योतिर्लिंग है, जो नर्मदा के उत्तरी तट पर अध्यासीन है। जिस स्थान पर यह ज्योतिर्लिंग अध्यासीन है, उस स्थान पर नर्मदा नदी बहती है तथा पहाड़ के चारों ओर नदी बहने से यहाँ ॐ का आकार बनता है। ॐ शब्द की उत्पत्ति ब्रह्मा के मुख से हुई है। इस कारण किसी भी आध्यात्मिक शास्त्र अथवा वेदों का पाठ ॐ के साथ ही किया जाता है। यह ज्योतिर्लिंग ओंकार अर्थात ॐ का आकार लिए हुए है, इस कारण यह ओंकारेश्वर नाम से प्रसिद्ध है।

5. केदारनाथ ज्योतिर्लिंग

केदारनाथ स्थित ज्योतिर्लिंग भी भगवान शिव के बारह प्रमुख ज्योतिर्लिंगों में गिना जाता है। यह उत्तराखंड में स्थित है। केदारनाथ का मंदिर बद्रीनाथ के मार्ग में अध्यासीन है। केदारनाथ समुद्र तल से तीन हज़ार पाँच सौ चौरासी मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। केदारनाथ का वर्णन स्कन्दपुराण एवं शिवपुराण में भी मिलता है। यह तीर्थ भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है। शिवपुराण के अनुसार जिस प्रकार कैलास का महत्व है, उसी प्रकार भगवान् शिव ने केदार क्षेत्र को भी महत्त्वपूर्ण कहा है।

6. भीमशंकर ज्योतिर्लिंग

भीमशंकर ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के पुणे जिले में सह्याद्रि नामक पर्वत पर विद्यमान है। भीमशंकर ज्योतिर्लिंग मोटेश्वर महादेव के नाम से भी प्रसिद्ध है। इस मंदिर के विषय में मान्यता है, कि जो भक्त श्रद्धा से इस मंदिर के प्रतिदिन प्रातः सूर्य उगने पर दर्शन करता है, उसके सात जन्मों के पाप दूर हो जाते हैं तथा उसके लिए स्वर्ग के मार्ग खुल जाते हैं।

7. काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग

विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह उत्तरप्रदेश के काशी नामक स्थान पर स्थित है। काशी सभी धर्मस्थलों में सबसे अधिक महत्व रखती है। इसलिए सभी धर्मस्थलों में काशी का अत्यधिक महत्व कहा गया है। इस स्थान की मान्यता है, कि प्रलय आने पर भी यह स्थान बना रहेगा। इसकी रक्षा के लिए भगवान शिव इस स्थान को अपने त्रिशूल पर धारण कर लेंगे और प्रलय के टल जाने पर काशी को उसके स्थान पर पुनः रख देंगे।

8. त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग

यह ज्योतिर्लिंग गोदावरी नदी के पास महाराष्ट्र राज्य के नासिक जिले में विद्यमान है। इस ज्योतिर्लिंग के सबसे अधिक निकट ब्रह्मगिरि नामक पर्वत है। इसी पर्वत से गोदावरी नदी प्रकट होती है। भगवान महादेव का एक नाम त्र्यम्बकेश्वर भी है। कहा जाता है, कि भगवान महादेव को गौतम ऋषि तथा गोदावरी नदी के आग्रह पर यहाँ ज्योतिर्लिंग रूप में अध्यासीन रहना पड़ा।

9. वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग

श्री वैद्यनाथ शिवलिंग का समस्त ज्योतिर्लिंगों की संगणना में नौवाँ स्थान है। भगवान् श्री वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग का मन्दिर जिस स्थान पर अवस्थित है, वह वैद्यनाथ धाम नाम से प्रसिद्ध है । यह स्थान झारखण्ड प्रान्त (पूर्व में बिहार प्रान्त) के संथाल परगना के दुमका नामक जनपद में है। यह स्थान बाबा धाम के नाम से भी

प्रसिद्ध है। ऐसी मान्यता है, कि यहाँ स्नान करने से पूर्वजन्मकृत पापों का क्षय हो जाता है, अत: उनसे उत्पन्न होने वाले रोग प्राणी को कष्ट नहीं देते हैं।

10. नागेश्वर ज्योतिर्लिंग

यह ज्योतिर्लिंग गुजरात के बाहरी क्षेत्र द्वारिका नामक स्थान पर विद्यमान है। धर्म शास्त्रों में भगवान शिव नागों के देवता है और नागेश्वर का पूर्ण अर्थ नागों का ईश्वर है। भगवान शिव का एक अन्य नाम नागेश्वर भी है। द्वारकापुरी से भी नागेश्वर ज्योतिर्लिंग की दूरी सत्रह मील की है। इस ज्योतिर्लिंग की महिमा के विषय में कहा जाता है, कि जो व्यक्ति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ दर्शनों के लिए आता है, उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं।

11. रामेश्वर ज्योतिर्लिंग

तमिलनाडु राज्य के रामनाथपुरम् नामक स्थान पर रामेश्वरम् ज्योतिर्लिंग स्थित है। भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक होने के साथ–साथ यह स्थान हिंदुओं के चार धामों में से भी एक है। इस ज्योतिर्लिंग के विषय में मान्यता यह है, कि इसकी स्थापना स्वयं भगवान् श्री राम ने की थी। भगवान राम के द्वारा स्थापित होने के कारण ही इस ज्योतिर्लिंग को भगवान श्री राम के नाम पर रामेश्वरम् दिया गया है।

12. घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग

महाराष्ट्र के संभाजीनगर के समीप दौलताबाद के पास घृष्णेश्वर महादेव का प्रसिद्ध मंदिर विद्यमान है। यहाँ विद्यमान शिवलिङ्ग को घृष्णेश्वर के स्थान पर भ्रम से घुश्मेश्वर भी मान लिया गया है, किन्तु पुराणों के अनुसार घृष्णेश्वर पृथक् पृथक् स्थानों पर अवस्थित शिवलिङ्ग हैं। भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में यह अंतिम ज्योतिर्लिंग है।

[(विशेष – घुश्मेश्वर शिवलिङ्ग राजस्थान के जयपुर टोंक सवाई माधोपुर जिलों की सीमाओं के संयुक्त स्थान पर शिवालय (सिवाड़) नामक ग्राम में है, जिसके पौराणिक प्रमाण स्थानावशेष आज भी विद्यमान है)

– सम्पादक]